

डॉ. डेविड टर्नर, गॉस्पेल ऑफ़ जॉन, सत्र 8, जॉन 6

© 2024 डेविड टर्नर और टेड हिल्डेब्रांट

यह जॉन के सुसमाचार पर अपने शिक्षण में डॉ. डेविड टर्नर हैं। यह सत्र 8 है, एक महत्वपूर्ण भोजन और एक कठिन शिक्षण। यूहन्ना 6:1-71.

नमस्ते, जॉन अध्याय छह पर हमारे वीडियो में आपका स्वागत है। चूंकि हमने यीशु को आखिरी बार यरूशलेम में देखा था, वह सब्ब के दिन अपने व्यवहार के बारे में धार्मिक नेताओं के साथ बहस कर रहे थे और सब्ब के दिन लकवाग्रस्त व्यक्ति को ठीक कर रहे थे और वहां बड़ी कठिनाइयों में पड़ रहे थे, जिसके कारण उनके बारे में उनकी शिक्षा बस वही कर रही थी जो पिता ने उन्हें दी थी। करने के लिए, उन्हें इंगित करते हुए कि उन्हें न केवल उसके साथ बल्कि पिता के साथ भी समस्याएँ थीं, और वे मूसा को ठीक से समझ भी नहीं रहे थे। इसलिए, जैसे ही हम जॉन 6 की ओर बढ़ते हैं, हमारे पास एक संक्रमणकालीन समय होता है जहां यीशु यरूशलेम से गलील सागर के पूर्वोत्तर क्षेत्र तक यात्रा कर रहे हैं, लगभग वही क्षेत्र जिसके बारे में हम आज समाचारों में गोलान के क्षेत्र के रूप में सुनते हैं, गोलानी क्षेत्र जैसा कि इज़रायली इसे कहते हैं।

तो, गोलान, गलील सागर के पूर्व में काफी ऊँचा मैदानी क्षेत्र। और संक्षेप में परिच्छेद के कथात्मक प्रवाह का अनुसरण करने के लिए, यीशु वहां बहुत कम मात्रा में लोगों को खाना खिला रहे हैं, और इसलिए हम वहां चमत्कारी भोजन करते हैं, भीड़ के दबाव से बचने के लिए पहाड़ पर चले जाते हैं। उसके ठीक बाद, शिष्य नाव में सवार होकर संभवतः कफरनहूम क्षेत्र के उत्तर-पश्चिमी हिस्से की ओर जा रहे थे, और वे तूफान में थे।

यीशु उन्हें समुद्र पर चलते हुए दिखाई देते हैं और उन्हें भूमि पर ले आते हैं। यह अंततः उन लोगों को लाता है जिन्होंने भीड़, भोजन, भीड़ का अनुभव किया था, यह उन्हें यीशु का पीछा करते हुए वापस लाता है। इसके अतिरिक्त, तिबरियास के ऐसे लोग भी हैं जिन्होंने इसके बारे में सुना है और वे गोलान की ओर चले गए हैं और वहां यीशु को नहीं पाकर वापस कफरनहूम क्षेत्र में उनका पीछा कर रहे हैं।

और इसलिए, वह उन्हें वहां पढ़ा रहा है, और यह एक बहुत कठिन प्रवचन बन जाता है। यीशु जंगल में मन्ना की ओर संकेत करने के लिए चमत्कारी भोजन का उपयोग कर रहे हैं और इस तथ्य की ओर संकेत कर रहे हैं कि जिसने मन्ना दिया वह वास्तव में उसका पिता था, उसने अपनी तुलना मन्ना से करते हुए कहा कि वह जीवन की रोटी है, कुछ लोग उसके मांस को खाने और उसका खून पीने के बारे में शिक्षा देते हैं, जो एक अर्थ में अनुभव करने, संबंधित होने, उसे ईश्वर से अपने हिस्से के रूप में आत्मसात करने की आवश्यकता का वर्णन करने का एक बहुत ही अजीब तरीका है, न कि केवल अनुभव करने के बाद अपना पेट भरने की इच्छा रखते हैं। चमत्कारी भोजन. अतः यह पाठ अत्यंत कठिन शिक्षण बन जाता है।

कई शिष्य चले जाते हैं और अब उनका अनुसरण नहीं करते हैं। और इसलिए, अध्याय के अंत में, पीटर से पूछा जा रहा है कि क्या वह भी जा रहा है। वह कहता है कि वह नहीं है।

और यहूदा भी इस बिंदु पर गुप्त रूप से यहूदा की ओर संकेत करता है। और इसलिए, अध्याय में थोड़ा पूर्वाभास और संघर्ष है, जैसा कि हमने अध्याय 5 में देखा था। और इसलिए, यह बहुत सारे भूगोल के साथ एक दिलचस्प अध्याय बन जाता है। हम आगे भूगोल की ओर मुड़ते हैं।

हमें 6.1 में बताया गया है कि यह गलील सागर पर होता है। इज़रायली आज इसे किनेरेट कहते हैं। श्लोक 3 और श्लोक 15 में पर्वत का संदर्भ वास्तव में किसी स्पष्ट स्थान के लिए नहीं है, लेकिन जाहिर तौर पर गलील सागर के इस तरफ कहीं है।

यीशु कफरनहूम में अपने शिष्यों के साथ हैं। तिबरियास के लोग स्पष्ट रूप से यहाँ यीशु से मिलने की आशा में समुद्र पार करके आ रहे हैं और अंततः कफरनहूम में उन्हें देखने के लिए वापस आ रहे हैं। अतः पाठ में भूगोल थोड़ा जटिल हो जाता है।

इसी चीज़ को समझने का दूसरा तरीका, यहां एक अच्छा स्थलाकृतिक मानचित्र है जो पहाड़ों और वहां की चीज़ों को दर्शाता है। इसे देखने का यह एक और तरीका है। आज यदि आप इस क्षेत्र में जाते हैं, तो आप कैपेरनम के दक्षिण-पश्चिम में तब्द्या में, रोटियों और मछलियों के गुणन का चर्च पाएंगे।

और उनके पास चर्च में एक वेदियों के नीचे यह अच्छा बीजान्टिन मोज़ेक है। और यदि आपको यह पसंद है, तो आप कितने भी कॉफी कप, तश्तरियां, या कटोरे खरीद सकते हैं जिन पर यह उभरा हुआ हो। इसलिए, फिर पाठ की भौगोलिक सेटिंग से हटकर यह विश्लेषण करने का प्रयास करें कि यहां क्या हो रहा है।

मुझे लगता है कि हम कह सकते हैं कि जॉन 6 में, दो चमत्कार हैं जो तीन वार्तालापों को जन्म देते हैं। प्राथमिक चमत्कार जॉन 6, श्लोक 1-15 में भीड़ को खाना खिलाना होगा, जो कि एकमात्र चमत्कार है जिसका वर्णन सभी चार सुसमाचारों में किया गया है। मैथ्यू, मार्क और ल्यूक के पास समान रूप से इस कहानी के संस्करण हैं।

एक चमत्कार जो उसी के पीछे है, मैं इसे यहां एक द्वितीयक चमत्कार कह रहा हूं क्योंकि शेष अध्याय में इसका उतना महत्व नहीं है, जहां यीशु पानी पर चल रहे हैं। इन भोजनों के बाद और उस समय यीशु का अनुसरण करने वाले लोगों के बीच, हमारे बीच ये बातचीत होती है। और बातचीत, जैसा कि मैं उन्हें चित्रित करना चाहता हूं, एक व्यापक समूह से छोटे समूह और फिर बारह तक जाती है।

हम वापस जाएंगे और इसे फिर से अधिक गहराई से देखेंगे, लेकिन ऐसा लगता है कि यीशु जो कह रहे हैं उससे भीड़ भ्रमित हो गई है। यहां तक कि यीशु के अनुयायियों, शिष्यों को भी इससे परेशानी होती है और उनमें से कई लोग चले जाते हैं। फिर यीशु अध्याय के अंत में बारहों से बात करते हैं और जो कुछ वह सिखा रहे हैं उससे उनका सामना कराते हैं।

तो, मुझे लगता है कि इस अध्याय में हम इसे एक केन्द्राभिमुख शक्ति कहेंगे, जो कि बाहर से यीशु के सबसे घनिष्ठ सहयोगियों में से एक की ओर जाने वाली चाल है। यह बीच का समूह है जिसका अंदाजा लगाना कठिन है, भीड़ या भीड़, जो लोग यीशु के पीछे चल रहे हैं यह देखने के लिए कि कोई भी शानदार चीज़ आने वाली है। लेकिन फिर भी ऐसे लोग हैं जो शिष्य हैं, कम से कम शब्द के कुछ अर्थों में, लेकिन जो यहां जॉन 6 में दी गई शिक्षा को संभालने में सक्षम नहीं हैं और जो चले जाते हैं।

और अंत में, यीशु बारहों पर जिम्मेदारी डालता है और इन कठिनाइयों के बारे में सीधे उनसे बात करता है। इसलिए अध्याय का थोड़ा विश्लेषण करने की कोशिश करते हुए, यीशु की उन लोगों के साथ बातचीत जो उसका पीछा कर रहे हैं, कुछ मायनों में अनुसरण करना कठिन है क्योंकि वह उन लोगों से कहता है जिन्होंने देखा कि उसने क्या किया, उन्होंने वास्तव में वह नहीं देखा जो उसने किया था किया। इसलिए, हमारे यहां देखें शब्द का थोड़ा दोहरा अर्थ है और यह पता लगाना थोड़ा मुश्किल है कि वास्तव में क्या हो रहा है।

तो, जो चीज़ यीशु को भीड़ को खिलाने के बाद पहाड़ पर वापस ले गई, वह अध्याय 6 श्लोक 14 में चलती है। लोगों ने यीशु द्वारा दिखाए गए चमत्कार को देखा, वे कहने लगे, निस्संदेह यह वह भविष्यवक्ता है जो आने वाला है दुनिया। यीशु, यह जानते हुए कि वे आकर उसे बलपूर्वक राजा बनाना चाहते थे, फिर से अकेले पहाड़ पर चला गया।

यदि आप इसे द्वितीय मंदिर यहूदी लोग कहना चाहते हैं तो यह मसीहावाद में एक दिलचस्प खिड़की है क्योंकि वे स्पष्ट रूप से व्यवस्थाविवरण 18 की अपनी समझ से काम कर रहे हैं जब वे कहते हैं, निश्चित रूप से यह पैगंबर है। लेकिन वे जॉन के विचार में यीशु के पास आते हैं, वह इसका वर्णन करते हैं, उनका इरादा था कि वे आएँ और उन्हें राजा बनाएं। तो क्या हमारे यहां एक प्रकार का सहसंबंध है या एक मसीहाई राजसी आकृति बनाम एक मसीहाई भविष्यसूचक आकृति का संयोजन है, मृत सागर स्क्रॉल का अध्ययन करने वाले लोगों ने देखा है कि कुछ ग्रंथों में, स्क्रॉल में मसीहावाद का द्वंद्व भी है।

इसलिए, अब हम इसमें शामिल नहीं होंगे, लेकिन यह दिलचस्प है कि मसीहा के बारे में लोकप्रिय विचार वहां मौजूद थे। अध्याय 7 में भी ये एक बड़ा मुद्दा बनने जा रहे हैं। वहाँ यीशु के बारे में काफ़ी बहस चल रही थी कि क्या वह सचमुच मसीहा हैं या नहीं, और बहस इस बात पर चल रही थी कि यह क्यों, वह क्यों।

तो, हम यहां इस अध्याय में एक खिड़की के रूप में कुछ देख सकते हैं। इसलिए, यीशु को उनका राजा बनने के लिए मजबूर होने की कोई आवश्यकता नहीं है। यह थोड़ा विरोधाभासी है, क्या ऐसा नहीं है कि जिस व्यक्ति के पास यीशु जैसी शक्ति है, उसे किसी भी चीज़ के लिए मजबूर किया जा सकता है, लेकिन यही उनका इरादा था।

वे उसे पकड़कर एक लोकप्रिय मसीहाई व्यक्ति में बदल देने वाले थे और वह उससे दूर चला गया क्योंकि वह उस तरह का मसीहा नहीं था जैसा कि वह था। इसलिए, शाम को, पद 16, शिष्य झील के पास गए और जाहिर तौर पर पूर्वी हिस्से से उत्तर-पश्चिम की ओर कफरनहूम की ओर

चल पड़े और वे तूफान में थे और वे वास्तव में कहीं नहीं पहुंच रहे थे। इसलिये, यीशु पानी पर चलकर उनके पास आये, और वे डर गये।

भला, ऐसा कौन होगा जो किसी आकृति को अपनी ओर आते हुए नहीं देखेगा? वे शायद उसे ठीक से नहीं देख सके। हम निश्चित रूप से समझते हैं कि ये अनुभवी मछुआरे हैं। वे पहले भी वहाँ झील पर जा चुके हैं।

जाहिर तौर पर यह कोई हल्का सा झटका नहीं है। यह एक गंभीर तूफान है। तो, उनका डर वास्तव में कुछ असाधारण रहा होगा।

तो, वह कहते हैं, इससे मुझे डर नहीं लगता। वे उसे नाव के पास ले गए और जाहिर तौर पर और चमत्कारिक रूप से नाव तुरंत किनारे पर आ गई। अगले दिन, पद 22, भीड़ देखेगी कि उनके पास अब यीशु नहीं है और उन्हें उसे पकड़ना होगा।

इसलिए, वे तिबरियास के लोगों के साथ कफरनहूम में यीशु से मिलने आए। यहां यह थोड़ा भ्रमित करने वाला है कि यह सब ऐतिहासिक रूप से कैसे कार्यान्वित हुआ होगा। इसलिए वे नावों में चढ़ गए और यीशु की तलाश में कफरनहूम की ओर चल पड़े।

इसलिए, जब वे उसे पकड़ते हैं, तो प्रवचन, बहस और कठिन शिक्षण श्लोक 25 में शुरू होता है। जब उन्होंने उसे झील के दूसरी ओर पाया, तो उन्होंने उससे कहा, रब्बी, तुम यहाँ कब आए? उस प्रश्न पर यीशु की प्रतिक्रिया अनुत्तरदायी है। वह वास्तव में उनसे इस बारे में बात नहीं कर रहा है कि वह वहाँ कब पहुंचा था।

वह शुरुआत में उसकी तलाश में उनके उद्देश्यों को संबोधित कर रहा है। सो वह कहता है, तुम मुझे इसलिये नहीं ढूँढ़ रहे हो, कि तुम ने वे चिन्ह देखे जो मैं ने दिखाए थे, परन्तु इसलिये कि तुम ने रोटियां खाईं, और तृप्त हो गए। तुमने भरपेट खाया।

उस भोजन के लिये काम न करो जो सड़ जाता है, परन्तु उस भोजन के लिये काम करो जो अनन्त जीवन तक कायम रहता है, जिसे मनुष्य का पुत्र तुम्हें देगा। उस पर परमपिता परमेश्वर ने अपनी स्वीकृति की मुहर लगा दी है। ईश्वर द्वारा यीशु पर अपनी स्वीकृति की मुहर लगाने का यह विचार शायद एक बार फिर, पिता द्वारा यीशु को उपहार देने, यीशु को ईश्वर की आत्मा के साथ सक्षम करने, जॉन 1 और पाठ में जॉन द बैपटिस्ट की शिक्षा पर वापस जाने का एक अंतर्निहित तरीका है। अध्याय 3 के अंत में यूहन्ना यीशु को बिना माप के आत्मा देता है।

इसलिए, जब हम परिच्छेद को समझने का प्रयास करते हैं तो यह हमारे लिए थोड़ी दुविधापूर्ण हो जाती है। यीशु उन लोगों से बात करते हैं जिन्होंने देखा कि उसने क्या किया और जिन्होंने अनुभव किया कि उसने क्या किया, और वह उनसे कहते हैं, तुम ने नहीं देखा कि मैं ने क्या किया। बस आपका पेट भर गया।

तो, उन्हें एक स्तर पर एक चिन्ह दिखाई दिया। उन्होंने वह नहीं देखा जिसकी ओर संकेत इंगित कर रहा था। जहाँ तक यह इंगित करने की बात है कि यीशु वास्तव में कौन था, उन्हें उस चिन्ह का अर्थ समझ नहीं आया।

उन्होंने तो बस बाहरी हिस्सा देखा। उन्हें यह संदेश नहीं मिला कि यह चिन्ह चित्रित कर रहा था। इसलिए, अब हम इस लंबे प्रवचन में शामिल होते हैं कि यीशु वास्तव में कौन थे।

तो, यीशु ने परमेश्वर के कार्यों के बारे में बात करते हुए कहा, परमेश्वर जिस कार्य की अपेक्षा करता है उसे करने के लिए हमें क्या करना चाहिए? यीशु कहते हैं, मुझ पर विश्वास करो। उन्होंने कहा, हमें एक निशानी दिखाएंगे। खैर, निःसंदेह, वह उन्हें पहले ही संकेत दिखा चुका है।

तो फिर तू क्या चिन्ह देगा, कि हम देखकर तेरी प्रतीति करें? क्या करेंगे आप? हमारे पूर्वजों ने जंगल में मनुष्य को खा लिया। जैसा लिखा है, उस ने उन्हें खाने के लिये स्वर्ग से रोटी दी। तो, यीशु को इसकी समझ नहीं है।

तो, वह आयत 32 में कहता है, यह मूसा नहीं है जिसने तुम्हें स्वर्ग से रोटी दी है, बल्कि मेरे पिता ने दी है। परमेश्वर की रोटी वह रोटी है जो स्वर्ग से उतरती है और जगत को जीवन देती है। निःसंदेह, यह कहने का एक अस्पष्ट तरीका है जो न केवल वर्णन करता है कि भगवान ने मूसा के माध्यम से क्या किया, बल्कि अब भगवान यीशु के माध्यम से और भी महत्वपूर्ण रूप से क्या कर रहे हैं।

तो, वे कहते हैं, कुएं पर मौजूद महिला की तरह, मैं भी इस पानी को और अधिक पीना चाहूंगी। वे कहते हैं, ठीक है, हम यह रोटी और खाना चाहते हैं। तो यहाँ यीशु का एक ही प्रकार का अर्थ, एक ही प्रकार की शिक्षण तकनीक, एक आध्यात्मिक बिंदु बनाने के लिए शब्दों के दोहरे अर्थ का उपयोग करना।

यीशु ने तब एक लंबा लाल अक्षर वाला खंड कहा था, यदि आप लाल अक्षर वाली बाइबिल में श्लोक 35 से 40 तक देख रहे हैं, तो यह सिखाता है कि वह वास्तव में जीवन की रोटी है। हममें से जो केल्विनवादी हैं वे भी इस खंड को पसंद करते हैं, विशेष रूप से श्लोक 37 के कारण, जो कुछ भी पिता मुझे देता है वह मेरे पास आएगा। जो लोग मेरे पास आते हैं, मैं उन्हें कभी नहीं भगाऊंगा।

मैं अपनी इच्छा पूरी करने के लिये नहीं, परन्तु अपने भेजनेवाले की इच्छा पूरी करने के लिये स्वर्ग से नीचे आया हूँ। जिसने मुझे भेजा है उसकी इच्छा यह है कि उसने मुझे जो कुछ दिया है उसमें से मैं कुछ भी न खोऊँ और अंतिम दिन उसे फिर से जीवित कर दूँ। यह पिता की इच्छा है कि जो कोई पुत्र की ओर देखता है और उस पर विश्वास करता है, उसे अनन्त जीवन मिलेगा।

640 काफी हद तक अध्याय 3, श्लोक 14 जैसा लगता है, जो मूसा द्वारा जंगल में साँप को उठाने का संकेत देता है। इसलिए, यीशु उन्हें सिखा रहे हैं कि वह असली रोटी हैं और उन्हें किसी ऐसे व्यक्ति की तुलना में उनके बारे में अधिक चिंतित होना चाहिए जो उनकी शारीरिक जरूरतों का ख्याल रखेगा। तो, वे कहते हैं, हम वास्तव में वह नहीं समझते जो वह कह रहा है।

वे कहते हैं, उसका मतलब क्या है? मैं जीवन की वह रोटी हूँ जो स्वर्ग से उतरी है। क्या यह यूसुफ का पुत्र यीशु नहीं है? हम इस आदमी के बारे में जानते हैं। यह स्वर्ग की रोटी का व्यवसाय क्या है? वह कैसे कह सकता है कि मैं स्वर्ग से आया हूँ? इसलिए पाठ के पाठक के रूप में, प्रस्तावना पढ़ने के बाद, हमें इसकी समझ है जो उनके पास नहीं है।

और इसलिए, यीशु उनसे निपटने की कोशिश करता रहता है ताकि उन्हें यह समझ आ सके कि वह वास्तव में कौन है। वह कहता है, कोई मेरे पास नहीं आ सकता जब तक कि पिता जिस ने मुझे भेजा है उसे खींच न ले। मैं उसे अंतिम दिन जीवित कर दूँगा।

पुराने नियम के श्लोक 45 में यशायाह अध्याय 54 के श्लोक 13 का संकेत है, हर कोई जिसने पिता को सुना है और उससे सीखा है वह मेरे पास आता है। इसहाक पाठ की ओर संकेत करते हुए, उन सभी को ईश्वर की शिक्षा दी जाएगी। अब वह अपने और रोटी के बीच संबंध को बहुत विशिष्ट बनाना शुरू कर देता है।

तो, पद 48 में, मैं जीवन की रोटी हूँ। तुम्हारे पूर्वजों ने जंगल में मन्ना खाया और वे मर गए, लेकिन उनकी असली रोटी स्वर्ग से नीचे आती है। मैं जीवित रोटी हूँ।

यह रोटी मेरा मांस है, जिसे मैं जगत के जीवन के लिये दूँगा। तो, वे कहते हैं, वह हमें अपना मांस खाने के लिए कैसे दे सकता है? तो, श्लोक 53 में, यीशु संगति को दोगुना कर देते हैं। वह कहता है, मैं तुम से सच कहता हूँ, जब तक तुम मनुष्य के पुत्र का मांस न खाओ, और उसका लोहू न पीओ, तुम में जीवन नहीं।

जो मेरा मांस खाता और मेरा लहू पीता है, अनन्त जीवन उसी का है। मैं उसे अंतिम दिन जीवित कर दूँगा। ये बातें उस ने कफरनहूम के आराधनालय में उपदेश करते समय कहीं।

श्लोक 59 फिर हमें भौगोलिक सेटिंग में वापस लाता है। इसलिए, यीशु यहाँ यह बिल्कुल स्पष्ट कर रहे हैं कि वह सच्ची रोटी हैं और अनन्त जीवन पाने के लिए उन्हें सचमुच उसे खाना चाहिए और उसका खून पीना चाहिए। यह बहुत कठिन शिक्षा है।

इसलिए, हम पद 60 पर बिल्कुल भी आश्चर्यचकित नहीं हैं, जहाँ उनके शिष्य कहते हैं, हमें वास्तव में यह समझ में नहीं आता है। शिष्यों को पृष्ठभूमि के रूप में उपयोग करते हुए, यीशु उन्हें सिखाते हैं कि यदि आपको इससे परेशानी है, तो क्या होगा यदि आप मनुष्य के पुत्र को वहाँ चढ़ते हुए देखें जहाँ वह पहले था? आत्मा जीवन देती है। मांस का कोई महत्व नहीं है।

जो शब्द मैं ने तुम्हें दिए हैं वे आत्मा और जीवन हैं, तौभी तुम में से कुछ लोग हैं जो विश्वास नहीं करते। फिर, श्लोक 64 में संभवतः यहूदा की ओर संकेत है। उसने उनसे कहा, यही कारण है कि मैंने तुमसे कहा था कि कोई भी मेरे पास तब तक नहीं आ सकता जब तक कि पिता उसे सक्षम न करे।

यीशु स्पष्ट रूप से इन लोगों को सिखा रहे हैं कि जिस कारण से उन्हें पाने में परेशानी हो रही है, उन्होंने वास्तव में वह नहीं सुना है जो भगवान अपने चमत्कारों के माध्यम से कह रहे हैं। वह

अनिवार्य रूप से उनसे कह रहा है, ईश्वर आपको समझने में मदद करने के लिए रहस्यमय तरीकों से काम करता है। आपको अपने आप को ईश्वर के प्रति समर्पित करना होगा और सुनना होगा कि मनुष्य के पुत्र के रूप में मेरे बारे में उसकी आत्मा आपसे क्या कह रही है, जो वास्तव में सिर्फ कोई ऐसा व्यक्ति नहीं है जो आपकी शारीरिक और भौतिक जरूरतों का ख्याल रखने, आपके सामान और सामान प्रदान करने के लिए आया है। सेवाएँ, लेकिन कोई ऐसा व्यक्ति जो आपकी उससे कहीं अधिक गहन आवश्यकताओं को पूरा करने आया है।

इसलिए, जब हम इसे फिर से देखते हैं, तो हम ध्यान देते हैं कि कैसे यीशु इन 12 लोगों से इन चीजों के बारे में बात करते हैं और उनसे पूछते हैं कि क्या वे भी दूर जा रहे हैं। पद 68 में पतरस समूह की ओर से बोलता है और कहता है, हे प्रभु, हमें किसके पास जाना चाहिए? आपके पास शाश्वत जीवन की बातें हैं। हम यह विश्वास करने और जानने आए हैं कि आप वास्तव में ईश्वर के पवित्र व्यक्ति हैं।

यह एक अच्छा, गर्मजोशी भरा, अस्पष्ट क्षण है। हमें खुशी है कि पीटर वहां खड़ा है और इन बातों को उसी तरह कहता है जैसे वह कहता है। गॉस्पेल में पीटर अक्सर शिष्यों के लिए बोलेंगे और यीशु के बारे में वे बातें कहेंगे जो उनके मन में हैं, लेकिन इसके दूसरी तरफ, पीटर भी अक्सर मूर्खतापूर्ण बातें करेंगे और मूर्खतापूर्ण बातें कहेंगे जो शायद बाकी शिष्य हैं। करने के बारे में सोच रहा हूँ।

तो, पीटर शायद वह व्यक्ति बन जाता है जो एक पल में नायक होता है और अगले ही पल वह बकरी बन जाता है। यह पीटर के नायक क्षणों में से एक है, लेकिन पीटर को उस चमक का आनंद लेने की अनुमति देने के बजाय जो उसने यहां हासिल की है, अध्याय यीशु के यह कहने के साथ समाप्त होता है, क्या मैंने तुम्हें नहीं चुना है, 12, फिर भी तुम में से एक शैतान है? वाह, एक अच्छे, गर्मजोशी भरे, धुंधले पल से बाहर आने का क्या तरीका है। तो फिर वर्णनकर्ता ने लेखक को यह कहते हुए समाप्त किया कि वह यहूदा इस्करियोती के बारे में बात कर रहा था जो बाद में उसे धोखा देगा।

तो, यहाँ यहूदा के लिए कुछ संकेत हैं। इसलिए, जैसा कि हमने पहले उल्लेख किया है, हमारे पास एक तरह से यह पाठ हमें पूरे व्यापक समूह से लेकर 12 में दो लोगों के रूप में पीटर और जुडास तक ले जाता है। जुडास वर्तमान में 12 के साथ जुड़ा हुआ है।

हालाँकि, यहूदा अंततः उन शिष्यों में से एक बनने जा रहा है जो यीशु का अनुसरण करने से पीछे हट जाता है और उससे भी बदतर, वास्तव में उसे धोखा देता है। तो, यीशु के श्रोताओं को क्या समस्या थी? उन्हें उस व्यक्ति से परेशानी हो रही थी जिसने कहा था, अनन्त जीवन पाने के लिए तुम्हें मेरा मांस खाना और मेरा खून पीना होगा। एक यहूदी व्यक्ति के लिए यह बहुत अचानक और कठिन बात है, विशेष रूप से सुनने के लिए, हम सभी के लिए ऐसी किसी चीज़ के बारे में सुनना जिसमें नरभक्षण की बू आती है, यह कठिन है।

लेकिन विशेष रूप से एक यहूदी व्यक्ति के लिए खून पीने के बारे में सुनना टोरा के अनुसार पूर्ण अपराध है। तो, यीशु वास्तव में यहाँ क्या कह रहे थे? जाहिरा तौर पर यीशु जो कह रहे थे वह

सिर्फ खुद का वर्णन करने के तरीके के रूप में मांस और रक्त के बारे में बात कर रहे थे। और उन्हें यह बताने के बजाय कि उन्हें वस्तुतः उसे आत्मसात करने की आवश्यकता है, वह उनसे कह रहा था कि उन्हें विश्वास के द्वारा उसे अपनाने की आवश्यकता है।

जॉन 6 के उन अंशों की तुलना करना दिलचस्प है जो यीशु पर विश्वास करने के परिणामों की बात करते हैं और जो वह उसके मांस खाने और उसका खून पीने के परिणामों के बारे में कहता है। इसलिए, उदाहरण के लिए, यदि हम अध्याय 6, श्लोक 35 को देखें, तो यीशु कहते हैं, मैं जीवन की रोटी हूँ जो मेरे पास आएगी वह भूखा नहीं होगा। जो मुझ पर विश्वास करेगा वह कभी प्यासा न होगा।

इसलिए, हम रोटी के रूपक से आगे बढ़ते हुए केवल यह कहते हैं कि जो मेरे पास आता है और जो मुझ पर विश्वास करता है, वह विश्वास के साथ उसके पास आता है, जिसके परिणामस्वरूप कोई ऐसा व्यक्ति होगा जो भूखा या प्यासा नहीं है। तो जैसे वह यहां भौतिक रोटी के बारे में बात नहीं कर रहा है, वैसे ही वह शाब्दिक भूख और प्यास के बारे में भी बात नहीं कर रहा है। तो ये एक उपमा होगी।

एक उपमा, जैसे या वैसे का उपयोग किए बिना केवल एक तुलना है। यीशु कह रहे हैं कि मैं रोटी की तरह हूँ। जो व्यक्ति मुझे अपनाएगा वह उस व्यक्ति के समान होगा जो अच्छा भोजन करता है।

विश्वास आपको अपने जीवन में एक ऐसे बिंदु तक ले जाएगा जहां आप आध्यात्मिक रूप से भूखे और प्यासे नहीं रहेंगे। आप समझ जाएंगे कि एक इंसान होना क्या है और आपको उस अर्थ में भूख और प्यास नहीं लगेगी। आपको वास्तव में फिर से भूख और प्यास लगेगी और आपको भोजन की आवश्यकता होगी, लेकिन आपकी आध्यात्मिक ज़रूरतें पूरी हो जाएंगी।

तो, वह यहां 635 में जो कह रहा है उसकी तुलना 651 में उसने जो कहा उससे करें। मैं जीवन की रोटी हूँ। मैं वह जीवित रोटी हूँ जो स्वर्ग से उतरी है।

यदि कोई यह रोटी खाएगा, तो जो कोई मेरे पास आएगा, वह सर्वदा जीवित रहेगा। उसे भूख नहीं लगेगी। और जो रोटी मैं जगत के जीवन के लिथे देता हूँ वह मेरा मांस है।

इसके अलावा, हम अध्याय 6 श्लोक 40 की तुलना अध्याय 6 श्लोक 54 से कर सकते हैं। यह मेरे पिता की इच्छा है कि जो कोई सूर्य की ओर देखे और विश्वास करे, मैं जीवन की रोटी के समान हूँ, जो मेरे पास आता है और जो मुझ पर विश्वास करता है। इसलिये जो कोई मुझ पर दृष्टि करेगा और मुझ पर विश्वास करेगा उसे अनन्त जीवन मिलेगा, उसे कभी प्यास नहीं लगेगी, और मैं उसे अंतिम दिन फिर जिला उठाऊंगा।

श्लोक 54 के समान, जो कोई मेरा मांस खाता है और मेरा खून पीता है, जो कोई सूर्य की ओर देखता है और विश्वास करता है, खाता और पीता है, उसके पास अनन्त जीवन है, उसके पास अनन्त जीवन है। मैं उसे अंतिम दिन जीवित कर दूंगा। मैं उसे अंतिम दिन जीवित कर दूंगा।

तो, हमारे लिए, यह, बल्कि यीशु और भोजन करने और यीशु को खाने के बीच एक कठोर तुलना है, जो देखने में अजीब लगता है, एक अचानक तरीका है, उन्हें कहने का एक बहुत ही सीधा तरीका है, जब तक कि आप व्यक्तिगत रूप से मुझे उपयुक्त नहीं मानते हैं पिता की रोटी, तो तुम्हें सचमुच अनन्त जीवन कभी न मिलेगा। तो यीशु इस प्रकार क्यों बोलते हैं? मुझे लगता है कि कुछ ग्रंथों के धर्मशास्त्र को समझने के लिए समय-समय पर धर्मग्रंथ पर केल्विन की व्याख्याओं और उनकी टिप्पणियों को देखना दिलचस्प है। निस्संदेह, केल्विन एक बहुत प्रभावशाली धर्मशास्त्री थे।

केल्विन कई मायनों में आधुनिक बाइबिल व्याख्या के जनक भी थे। और उन्होंने जो टिप्पणियाँ लिखीं वे उनके समय में अद्भुत थीं, क्योंकि वे केवल पाठ को विषयगत रूप से नहीं ले रहे थे और उस पर सामयिक उपदेश नहीं दे रहे थे, वे वास्तव में पाठ को देख रहे थे। रोमनों के लिए केल्विन की टिप्पणी में, उनकी एक प्रस्तावना है जो उन्होंने अपने संरक्षक, साइमन ग्रिनस को लिखी थी, जिसमें उन्होंने कहा था, टिप्पणी लिखने का मेरा दर्शन लेखक ने जो कहा है उसे प्राप्त करना और आगे बढ़ना है।

उन्होंने कहा, मैं जो हासिल करना चाहता हूँ वह स्पष्ट संक्षिप्तता है। मैं स्पष्ट रूप से कहना चाहता हूँ कि लेखक ने क्या कहा है और फिर अनावश्यक मुद्दों पर जाए बिना आगे बढ़ना चाहता हूँ। बेशक, केल्विन, हम सभी की तरह, एक आदर्श व्यक्ति नहीं था और उसने अपना एजेंडा पूरी तरह से पूरा नहीं किया।

उसके पास मुद्दे थे, जैसे हम सभी के पास हैं। लेकिन इस विशेष पाठ के बारे में वह जो कहते हैं वह मुझे पसंद है। केल्विन ने कहा कि यीशु यहां ऐसे रूपकों का उपयोग करते हैं जो स्थिति के अनुरूप हैं।

दूसरे शब्दों में, जीवन प्रवचन की रोटी, जैसा कि इसे कभी-कभी कहा जाता है, एक ऐसी चीज़ है जो एक दरार है, यदि आप इसे ऐसा कहना चाहते हैं, तो भीड़ के भोजन के चमत्कार पर। उनका कहना है कि यीशु ने ऐसा इसलिए कहा क्योंकि वे मवेशियों की तरह अपने चारे की ओर दौड़ते थे। यह एक बहुत अच्छी पंक्ति है, क्या आपको नहीं लगता? क्योंकि वे मवेशियों की तरह अपने चारे की ओर दौड़ते हैं, ईसा मसीह अपने प्रवचन को रूपक के रूप में प्रस्तुत करते हैं और जीवन की नवीनता से संबंधित हर चीज़ को भोजन कहते हैं।

हम जानते हैं कि हमारी आत्माएँ सुसमाचार की शिक्षा से पोषित होती हैं जब यह आत्मा की शक्ति से हम पर प्रभावकारी होती है। यीशु कहते हैं, जो वचन मैं तुम से कहता हूँ वे आत्मा हैं, और वे जीवन हैं। तो, यहाँ मूल बात है।

जैसा कि विश्वास आत्मा के जीवन के लिए है, जो कुछ भी विश्वास को पोषण देता है और आगे बढ़ाता है उसकी तुलना भोजन से की जाती है। मुझे लगता है कि केल्विन ने इस टिप्पणी से यहाँ जो कुछ चल रहा है उसे अच्छी तरह से समझ लिया है। और चूँकि वे चीज़ों को केवल सतही स्तर पर देख रहे थे, वे उस रूपक से परे उस वास्तविकता तक नहीं पहुँच सके जिसका वह वर्णन कर रहा था।

इसलिए, जब यीशु भोजन के बारे में बात कर रहे थे, तो वे केवल यही सोच रहे थे कि यह आदमी हमें खिलाएगा और हमारा पेट भर जाएगा। वे इस तथ्य के बारे में नहीं सोच रहे थे कि उन्हें खाना खिलाकर, वह उन्हें दिखा रहा था कि वह भगवान की असली सच्ची रोटी है जो न केवल उनकी महसूस की गई जरूरतों को पूरा करने के लिए स्वर्ग में आता है, जो वे चाहते हैं, बल्कि जो उन्हें वास्तव में चाहिए, उसे भी पूरा करने के लिए। हालाँकि उन्हें इसका एहसास नहीं हुआ। एक और चीज़ जिसके बारे में हमें जॉन अध्याय 6 के संदर्भ में सोचने की ज़रूरत है, वह यह है कि संकेत और विश्वास किस तरह से काम करते हैं और इस विशेष अध्याय में दैवीय संप्रभुता इस मामले में कैसे खेलती है।

इसलिए, मैं यहां एक व्यवस्थित धर्मशास्त्री बनने और आपको चुनाव के सिद्धांत और इस तरह की चीज़ों के बारे में सिखाने की कोशिश नहीं कर रहा हूँ, लेकिन हमें किसी भी तरह से उस बात से जुड़ने की ज़रूरत है जो यीशु उनसे कह रहे हैं, जब वह कहते हैं, उन सभी से जिन्हें भगवान बुला रहे हैं मेरे पास मेरे पास आओगे। और जो कोई मेरे पास आएगा, मैं उसे बाहर न निकालूंगा। हम इस स्थिति को संकेतों और विश्वास के दृष्टिकोण से देख रहे हैं।

और कुछ लोग शब्द के कुछ अर्थों में यीशु पर विश्वास करते हैं। हमने पहली बार अध्याय 2 के अंत में इस बात पर ध्यान दिया। तो, आपके पास यहाँ जॉन 6 में ऐसे लोग हैं जो देखते हैं कि यीशु ने क्या किया है।

और इसलिए, उनका मानना है कि यदि वे उससे चिपके रह सकते हैं, तो वह उनके लिए ऐसा करना जारी रखेगा। तो, इस अर्थ में, वे यीशु पर विश्वास करते हैं। उन्होंने चिन्ह देखे, परन्तु वास्तव में उन्होंने चिन्ह नहीं देखे क्योंकि वे वास्तव में नहीं समझ पाए कि चिन्ह किस ओर इशारा कर रहे थे और परमेश्वर यीशु के माध्यम से क्या करने का प्रयास कर रहा था।

जॉन 6 फिर संकेतों और विश्वास के इस पूरे मुद्दे पर एक और परिप्रेक्ष्य डालता है। और यह दैवीय संप्रभुता का मुद्दा है और भगवान यहां यीशु के माध्यम से केवल उन लोगों के बारे में कह रहे हैं जो वास्तव में इसे प्राप्त करते हैं, वे होंगे जिन्हें आत्मा ने दिखाया है कि क्या हो रहा है। इसलिए, दैवीय संप्रभुता और मानवीय स्वतंत्रता के बारे में अपनी संपूर्ण सोच में इस अंश पर विचार करें, जिसे बहुत स्पष्ट रूप से पढ़ाए जाने की भी आवश्यकता है।

यहां एक और मुद्दा यह है कि किस तरह से मूसा की टाइपोलॉजी जॉन में आती है। याद करें कि अध्याय 1 में जॉन बैपटिस्ट से पूछा गया था कि क्या वह भविष्यवक्ता था। इन लोगों को विश्वास हो गया है कि यीशु वास्तव में भविष्यवक्ता हैं जो दुनिया में आएंगे।

उस भविष्यवक्ता के बारे में उनकी समझ यह थी कि वह उन्हें खाना खिलाएगा और उनकी सभी जरूरतों का ख्याल रखेगा। भविष्यवक्ता का चित्रण बिल्कुल वैसा नहीं है जैसा हमें मूल रूप से व्यवस्थाविवरण में मिला था, जो एक ऐसा भविष्यवक्ता है जिस पर बेहतर होगा कि आप ध्यान दें अन्यथा आपको खेद होगा। व्यवस्थाविवरण के अनुसार जब तक आप भविष्यवक्ता पर ध्यान नहीं देंगे, आपको पछतावा होगा।

लेकिन दुर्भाग्यवश, वे वास्तव में यीशु को एक भविष्यवक्ता के रूप में नहीं सोच रहे थे, बल्कि एक ऐसे व्यक्ति के रूप में सोच रहे थे जो उन्हें खाना खिलाएगा। इसलिए जैसे-जैसे यीशु उन्हें सिखाने के लिए आगे बढ़ते हैं, वह उन्हें भोजन और पानी के बारे में और अधिक बताते हैं। हमारे यहाँ स्वर्ग से मन्ना, जंगल में भटकने के कुछ संकेत हैं, निर्गमन अध्याय 12, भजन 107 भी कुछ हद तक उस पर प्रतिबिंबित करता है।

और इसलिए, अगर हम इसकी पृष्ठभूमि जानना चाहते हैं तो निर्गमन 12, भजन 107 और अन्य ग्रंथों की तुलना कर सकते हैं। यहां हम खुद को यह भी याद दिलाते हैं कि मूसा को इस पाठ में एक बार फिर फंसाया गया है, जो हमें प्रस्तावना में वापस ले जाता है जहां हमें बताया जाता है कि कानून वास्तव में मूसा द्वारा आया था। इसलिए, यह समझना कि जंगल में भटकने के दौरान मन्ना कैसे काम करता था, यह समझने के लिए आवश्यक है कि यीशु उन्हें अपनी भूमिका और अपने कार्य के बारे में यहां क्या सिखा रहे हैं।

इसके अतिरिक्त, जॉन 6 में, हम उस तरीके के बारे में सोचना चाहेंगे जिसमें यीशु उपयोग कर रहे हैं, शायद जॉन में पहली बार, मैं कथन हूँ। जॉन में मेरे कथन दो प्रकार के होते हैं। ऐसे कथन हैं जो योग्य हैं और ऐसे कथन हैं जो निरपेक्ष हैं।

कभी-कभी योग्य, जिन्हें मैं योग्य कथन कह रहा हूँ, उन्हें विद्वान साहित्य में विधेय वाले कथन, विधेय कथन कहा जाता है। तो, ऐसे कथन हैं जहां यीशु कहते हैं, मैं इस मामले में, जीवन की रोटी हूँ। अध्याय आठ में, यीशु कहने जा रहे हैं, मैं जगत की ज्योति हूँ।

और वह इस तरह की और भी कई बातें कहते हैं। यूहन्ना 10, मैं भेड़ों का द्वार हूँ। मैं अच्छा चरवाहा हूँ।

मैं सच्ची लता हूँ। इसलिए, हम जॉन में इस प्रकार के बहुत सारे कथन देखेंगे और लोग उनका मतलब समझने के लिए उनका अध्ययन करने में बहुत समय बिताते हैं। इसके अलावा, इनमें से कुछ कथन ऐसे हैं जिन्हें निरपेक्ष कथन कहा जाता है, ऐसे कथन जहां यीशु बस कहते हैं, मैं हूँ।

और हम इसे पहली बार संभवतः अध्याय आठ में पकड़ते हैं। यह एक और दिलचस्प बयान है क्योंकि ऐसा लगता है कि इसकी कुछ पृष्ठभूमि पुराने नियम में है क्योंकि अध्याय आठ में लोग इसे एक बयान के रूप में देख रहे हैं जहां यीशु बहुत कुछ कह रहे हैं और दिखावा कर रहे हैं और शायद खुद को भगवान के रूप में भी सोच रहे हैं और वे हैं। ऐसा नहीं है। इसलिए, जब हम जॉन आठ पर पहुंचेंगे, तो हमारे पास इस बारे में कहने के लिए और भी बहुत कुछ होगा।

अक्सर लोग यह कहने की कोशिश करते हैं कि इसकी पृष्ठभूमि निर्गमन अध्याय तीन में है, जहां भगवान कहते हैं, मैं वही हूँ जो मैं हूँ, या मैं वही रहूंगा जो मैं रहूंगा। निर्गमन तीन में हिब्रू में, मुझे यह अधिक संभावना लगती है कि यीशु मैं ही वह पाठ की ओर इशारा कर रहे हैं, जिसे हम व्यवस्थाविवरण की पुस्तक में देखना शुरू करते हैं। और यशायाह की पुस्तक में उनमें से कई हैं।

तो, हम जॉन अध्याय आठ में इसके बारे में और अधिक बात करेंगे, लेकिन मैं आपको इन अंशों से परिचित कराऊंगा, दोनों जहां यीशु कहते हैं, मैं जीवन की रोटी हूं या कुछ और जैसा कि यहां है। और पूर्ण कथन जहां वह बस कहता है, मैं जॉन के धर्मशास्त्र में समझने योग्य महत्वपूर्ण बातें हैं। हमें यह भी ध्यान देने की आवश्यकता है कि हमारे यहां यहूदा का एक और संदर्भ है।

अंततः हम अध्याय 13 में यहूदा को उसके घिनौने कृत्य को करते हुए देखेंगे। जॉन छः में वास्तव में जो उलझन में है, और मेरे पास जॉन का सुसमाचार है, वह वह तरीका है जिसके द्वारा यीशु यहाँ भोजन उपलब्ध कराता है। बहुसंख्यक यूचरिस्टिक ग्रंथों में बंधा हुआ है। विशेष रूप से यदि हम उस भाषा को देखें जिसका उपयोग जॉन छह में किया गया है और इसकी तुलना उन अंशों से करें जहां यीशु ने ऊपरी कमरे में सिनॉटिक परंपरा में टेबल स्थापित की है।

इसलिए, यदि हम यूहन्ना अध्याय छह और श्लोक 11 को देखें, तो श्लोक 10 में यीशु ने लोगों को बैठाया, फिर वह रोटियाँ लेते हैं, धन्यवाद देते हैं और उन्हें पास बैठे लोगों में बाँट देते हैं। यह बिल्कुल उसी तरह लगता है जिस तरह से सिनॉटिक परंपरा में यूचरिस्टिक भोजन किया जाता है। हमें इसके एक उदाहरण के रूप में एक पल के लिए मैथ्यू अध्याय 26 को देखना था।

मत्ती 26, पद 26, जब वे खा रहे थे, तो यीशु ने रोटी ली। बेशक, जॉन अध्याय छह, श्लोक 11 में यही कहा गया है, उसने रोटियाँ लीं। यह कहा जाता है, निस्संदेह, उसने इसे तोड़ दिया और अपने शिष्यों को दे दिया।

निःसंदेह, हम यूहन्ना अध्याय 6 और पद 11 में पढ़ते हैं, उन्होंने रोटी ली, उसने धन्यवाद दिया, और जो लोग बैठे थे उन्हें जितनी चाहें उतनी बाँट दी। मैथ्यू 26, 26, उस ने उसे तोड़ कर अपने चेलों को दिया और कहा, लो और खाओ, यह मेरी देह है। तो, ऐसा लगता है कि जो कोई भी यीशु के बारे में परंपरा से परिचित है, आज हमारी बाइबिल में, सिनॉटिक परंपरा, जो तब शायद सिर्फ एक मौखिक परंपरा थी, अगर उन्होंने वास्तव में इसे नहीं पढ़ा होता, तो जब वे इसे पढ़ते तो अपना सिर खुजलाते। पाठ किया और इसे सुना और सोचा कि इसका यूचरिस्ट, यीशु द्वारा स्थापित रोटी और कप के समारोह से कुछ लेना-देना है।

तो, सवाल यह होगा कि क्या यह एक यूचरिस्टिक पाठ है? हम 1 कुरिन्थियों अध्याय 11 को भी ला सकते हैं, जहां पॉल कुरिन्थियों को यीशु की परंपरा का चित्रण करता है और उनसे बात करता है कि उन्हें प्रभु की मेज का संचालन कैसे करना चाहिए। इसलिए, हम अपने आप से सवाल पूछते हैं, क्या जॉन छह यूचरिस्ट के बारे में एक पाठ है, जो इस तथ्य के प्रकाश में विशेष रूप से दिलचस्प है कि, जैसा कि आप शायद पहले से ही महसूस करते हैं, जब हमने पिछले हफ्ते यरूशलेम में जॉन के सुसमाचार में यीशु को पढ़ा था, यीशु अपने शिष्यों के साथ जो अंतिम भोजन करते हैं, वह प्रभु की मेज की कोई संस्था नहीं है। जॉन 13 और सिनॉटिक परंपरा के बीच कई अंतर हैं।

जब हम वहां पहुंचेंगे तो हम इसके बारे में और अधिक बताएंगे, लेकिन यह बिल्कुल स्पष्ट है कि जॉन 13 में उनके भोजन करने का उल्लेख है। यह भी स्पष्ट नहीं है कि यह फसह का भोजन है या

नहीं। और पैर धोने का समारोह है, लेकिन कोई ब्रेड और कप समारोह नहीं है, कोई संस्था नहीं है, नहीं यह मेरा शरीर है।

तो, सवाल यह है कि क्या यह यूचरिस्ट का जॉन संस्करण है? क्या यह जॉन हमें यह कह रहा है कि जब यीशु ने ऐसा किया, तो वह पूर्वनिर्धारित कर रहा था कि वह यूचरिस्ट के रूप में क्या करेगा, लेकिन निश्चित रूप से, जॉन सीधे तौर पर इसके बारे में बात नहीं करता है। यह शायद हमें कुछ विराम भी देगा जब हम चर्च में वर्षों से चले आ रहे विवाद के बारे में सोचते हैं जब यह प्रभु की मेज पर आता है जिसमें चर्च के संस्कार के बारे में कम विचार होते हैं, जिसे मूल रूप से कम चर्च अध्यादेश कह रहे हैं, जहां चीजें सख्ती से होती हैं प्रतीकात्मक. स्पेक्ट्रम के दूसरे छोर पर, उच्च चर्चों में, रोमन कैथोलिक और एंग्लिकन, शायद लूथरन में भी, संस्कार में ईसा मसीह की वास्तविक उपस्थिति पर बहुत अधिक जोर दिया जाता है।

शायद सुधारवादी परंपरा दोनों के बीच में है, जहां केल्विन ने बताया कि कैसे संस्कार एक ऐसी गतिविधि है जो शब्द में सिखाए गए प्रस्तावों को लागू करती है। तो, यह वचन का एक परिशिष्ट है, और यदि आप वचन में ईश्वर के वादों पर सही ढंग से अपना ध्यान केंद्रित करते हैं, जैसे आप तत्व प्राप्त करते हैं, या जब आप बपतिस्मा में भाग लेते हैं या उसका निरीक्षण करते हैं, तो ईश्वर का एक शक्तिशाली कार्य होता है, एक गतिशील संबंध जिसमें आप संस्कारों का पालन करते हुए या उनमें भाग लेते हुए पवित्र अनुग्रह प्राप्त कर रहे हैं। तो, जॉन 6 शायद एक ऐसा पाठ है जो इन चीजों के बारे में बात करता है और हमें इस पर विचार करने पर मजबूर करता है कि इस बारे में सब कुछ क्या है।

मुझे लगता है कि जिस समस्या या मुद्दे के बारे में हमें सोचना चाहिए वह इससे कहीं अधिक व्यापक है। हमें बाइबल में भोजन के संपूर्ण धर्मशास्त्र के बारे में अधिक व्यापक रूप से सोचना चाहिए और कैसे भोजन अक्सर भगवान की वफादारी को चित्रित करने का विषय है। इसलिए, यदि हम उत्पत्ति अध्याय 1 पर वापस जाएं, तो हम ध्यान देना शुरू करेंगे कि कैसे वहां भी, भगवान आदम और हव्वा को सृजित दुनिया से जीविका देते हैं, और वे इसे वहां से विभिन्न ग्रंथों में आत्मसात करते हैं।

वास्तव में, यही वह मुद्दा था जो अध्याय 3 में उनके लिए समस्याग्रस्त था, कुछ ऐसा खाना जो सीमा से बाहर था, इस तथ्य के बावजूद कि उनके लिए और कुछ भी उपलब्ध नहीं था। इसलिए, भोजन परमेश्वर के लोगों के लिए बहुत महत्वपूर्ण विषय बना हुआ है। व्यवस्थाविवरण अध्याय 8 में, प्रसिद्ध पाठ जिसका उल्लेख यीशु ने अपने प्रलोभन वृत्तांत में किया था, मनुष्यों को केवल रोटी से नहीं, बल्कि परमेश्वर के मुख से निकलने वाले हर शब्द से जीना है।

आइए उस पाठ को सामान्य रूप से न लें और भौतिक भोजन पर प्रकाश न डालें। मनुष्य को भोजन तो करना ही पड़ेगा। गरीबी और अकाल, उससे उत्पन्न होने वाले भोजन की कमी एक भयानक चीज़ है और कुछ ऐसा है जो अपने लोगों के लिए भगवान के इरादे का हिस्सा नहीं है।

इसलिए, भोजन एक महत्वपूर्ण चीज़ है और ऐसा कुछ है जिसका उपयोग मनुष्य भगवान की स्तुति करने और उसके लाभों के लिए उसे धन्यवाद देने के लिए करता है। इंसानों के साथ

समस्या यह है कि उनकी नजरें भोजन पर टिक जाती हैं और उस भगवान के बारे में भूल जाते हैं जिसने उन्हें यह दिया है। वह जंगल में इज़राइल के लिए एक समस्या थी, व्यवस्थाविवरण 8, और यहां जॉन अध्याय 6 में एक समान समस्या थी। इसलिए, भोजन और भगवान की वफादारी, जब हम प्रार्थना करते हैं, तो हम पिता से प्रार्थना करते हैं कि वह हमें हमारी दैनिक रोटी दे और हमारी पूर्ति करे जरूरत है।

मुझे लगता है कि रोटी का अर्थ वह सब कुछ है जिसकी मनुष्य को जरूरत है, भोजन, कपड़ा, आश्रय, बस भगवान से जीविका मांगना। जब हम इस सब को क्रियान्वित करते हैं और सोचते हैं कि भोजन और भोजन समग्र रूप से धर्मग्रंथों में कैसे वर्णित हैं, तो हम निश्चित रूप से निर्गमन अध्याय 12 में फसह की संस्था के बारे में सोचेंगे। अन्य पाठ इसके बारे में बात करते हैं, संख्याएँ 9, यहोशू 5, 2 राजा 23, एज़्रा 6 में फसह को कैसे पुनः स्थापित किया गया, इज़राइल के इतिहास के प्रमुख बिंदु जहां फसह के भोजन को फिर से स्थापित किया गया और उस प्रथा को फिर से एक मानक अभ्यास बनाया गया।

निःसंदेह, जॉन 6 में यीशु यहाँ सीधे तौर पर जिस बात की ओर संकेत कर रहे हैं वह निर्गमन अध्याय 16 में स्वर्ग से आया मन्ना है, और पुराने नियम के अन्य पाठ भी इसके बारे में बात करते हैं। शायद नहेमायाह 9.15 का पाठ जॉन 6.31 में कही गई बातों के सबसे करीब है। तो, ईश्वर द्वारा अपने लोगों के लिए भोजन प्रदान करने, इस्राएलियों के लिए एक विशेष भोजन प्रदान करने, मिस्र से उनके प्रस्थान का जश्न मनाने और उन्हें गुलामी से मुक्ति दिलाने के ईश्वर के उद्देश्य की इस पूरी परंपरा से, हमारे पास सिनोप्टिक परंपरा में यीशु हैं। यूचरिस्टिक भोजन उसी के एक नए विकास के रूप में और कैसे अधिनियम 2 में चर्च और अधिनियम की पुस्तक में अनुसरण करने वाले ने संभवतः साप्ताहिक आधार पर रोटी तोड़ने का एक समारोह किया था। बेशक, पॉल इसे कोरिंथ में एक स्थानीय चर्च अभ्यास के रूप में संदर्भित करता है और कोरिंथियन अभ्यास एक दुरुपयोग था और इसलिए पॉल उन्हें यह करने के उचित तरीके के बारे में निर्देश दे रहा है।

अंततः, तथापि, भोजन प्रभु की मेज पर नहीं रुकता। मुझे लगता है कि ये सभी भोजन, एक परम दावत की आशा करते हैं, प्रकाशितवाक्य अध्याय 19 में मेमने की शादी की दावत। मुझे लगता है, अन्य ग्रंथ भी इस तरह की दावत का संकेत देते हैं।

मत्ती 22, यूहन्ना 2, और इफिसियों 5 भी इसके संदर्भ में बात करते हैं, मुझे लगता है, ये महत्वपूर्ण हैं। तो, हम यहाँ क्या कह रहे हैं? हम यह कह रहे हैं कि जब हम जॉन अध्याय 6 को देखते हैं और जिस तरह से यीशु खुद की तुलना भोजन से कर रहे हैं और कह रहे हैं कि अनन्त जीवन पाने के लिए तुम्हें मुझे वैसे ही खाना होगा जैसे तुम खाना खाते हो, यीशु क्या कह रहे हैं यहां यह है कि आपको मेरे साथ एक अंतरंग संबंध रखना होगा जैसे कि भगवान ने सदियों से अपने लोगों को बहुत अलग तरीकों से ईमानदारी से प्रदान किया है। इसलिए, जब आप जॉन 6 को देखते हैं और भीड़ की घबराहट को समझते हैं, तो उनमें से कई लोग इससे पूरी तरह से विचलित हो गए थे, इसे समझ नहीं पाए, चले गए।

यहाँ तक कि यीशु के अनुयायी, शब्द के कुछ अर्थ में, शिष्य, उनमें से कई को इससे कठिनाई हुई और वे चले गए। तो, फिर यीशु ने इसे बारह में जोड़ दिया। पीटर उनके लिए सकारात्मक तरीके से बोलते हैं।

हालाँकि, यीशु यहूदा के नकारात्मक उदाहरण की ओर संकेत करते हैं। तो, अब यह प्रश्न हम सभी के सामने आता है कि हमने इसे इस तक सीमित कर दिया है कि क्या हम पतरस की तरह बनने जा रहे हैं या क्या हम यहूदा की तरह बनने जा रहे हैं? क्या हम भी चले जायेंगे? हम यहां यीशु की शिक्षा को निगलने जा रहे हैं, जो हमें बताती है कि बेहतर होगा कि हम उसे आत्मसात करें और उसके साथ घनिष्ठ संबंध बनाएं जो हमारे भोजन के साथ हमारे घनिष्ठ संबंध के समानांतर है। हममें से कुछ लोग खाने के शौकीन हैं।

हममें से कुछ लोगों को बिल्कुल सही प्रकार की कॉफ़ी पीनी होती है। हम इसे छूएंगे भी नहीं। यदि हमारे पास क्षमता है तो हम अपने भोजन के तरीके के बारे में बहुत खास हैं।

शायद हमें इस तथ्य पर दोबारा विचार करना चाहिए कि हम खाने के लिए नहीं जीते हैं, हम जीने के लिए खाते हैं। जॉन अध्याय 6 में हम क्या सीखते हैं, ऐसे लोग हैं जिनके लिए, खाना बहुत कुछ था। वह जीवन था।

यीशु यहाँ यह सिखाने का प्रयास कर रहे हैं कि जीवन में खाने के अलावा और भी बहुत कुछ है। जिस जीवन की वह बात कर रहे हैं वह जीवन है अर्थात् उसे आत्मसात करना और वास्तव में वही जीवन है।

यह जॉन के सुसमाचार पर अपने शिक्षण में डॉ. डेविड टर्नर हैं। यह सत्र 8 है, एक महत्वपूर्ण भोजन और एक कठिन शिक्षण। यूहन्ना 6:1-71.